

विषय-सूची

	पृष्ठ
भूमिका - राधावल्लभ त्रिपाठी	v
प्राक्कथन - सत्य प्रकाश शर्मा	xiii
विशेष वक्तव्य -	
(i) प्राकृत की साहित्यिक विरासत - कमलेश दत्त त्रिपाठी	xxii
(ii) प्राकृत की सांस्कृतिक विरासत - नामवर सिंह	xxiv

Section - I

प्राकृत और भारतीय चिन्तन परम्परा

1. प्राकृतसाहित्यसन्दर्भे सम्यग्दर्शनं तस्य प्रभावश्च -श्रीयांश कुमारः सिंघई	3
2. प्राचीन प्राकृत-पालि साहित्य में विभज्यवाद -भागचन्द्र जैन	11
3. प्राकृत साहित्य में जीवन-मूल्य -कल्पना जैन	24
4. प्राकृत साहित्य में चिन्तनीय तत्त्व -प्रेमचन्द्र रावका	38
5. बीसवीं शती में आगम साहित्य की स्थिति -इन्दु जैन	44
6. Philosophical Values in Pañcastikāyasaṃgraha. -Kokila H. Shah	47

Section - II

प्राकृत भाषा और व्याकरण

7. अर्धमागधी भाषा का उद्भव एवं विकास -सागरमल जैन	57
---	----

8.	संस्कृत और प्राकृत : परम्परा और अन्तःसम्बन्ध —देवर्षि कलानाथ शास्त्री	65
9.	प्राकृत का भाषावैज्ञानिक महत्त्व —वृषभ प्रसाद जैन	76
10.	प्राकृत एवं पालि भाषा का भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन —विजयकुमार जैन	86
11.	हिन्दी की बोलियों में प्राकृत भाषा के तत्त्व —पत्रिका जैन	95
12.	प्राकृत व्याकरण के अध्ययन में डॉ. रिचर्ड पिशल का योगदान —तारा डागा	101
13.	महार्थमञ्जरी में प्राकृत प्रयोग —हेमलता बोलिया	111
14.	The Grammar of the Ardhamāgadhī language —Dinanath Sharma	119
15.	Gāndhārī Prākṛta (Part I : Background) —S.P. Narang	129

Section - III

प्राकृत कथा साहित्य और भारतीय सांस्कृतिक परम्परा

16.	प्राकृत सट्टक कर्पूरमंजरी में सौन्दर्य-दर्शन —दामोदर शास्त्री	151
17.	शौरसेनी प्राकृत वाङ्मय में सांस्कृतिक तत्त्व —सुदीप जैन	160
18.	प्राकृत ग्रन्थों में राम का वैशिष्ट्य —रामजी राय	169
19.	आगम-ग्रन्थों में जैन-न्याय —धर्मचन्द्र जैन	175
20.	प्राकृत साहित्य में चरितकाव्य —एच. सी. जैन	185
21.	अपभ्रंश साहित्य के चरित ग्रन्थों का वैशिष्ट्य —सुमत कुमार जैन	190
22.	प्राकृत साहित्य में शीलकथाएँ —सलोनी जोशी	197

Section - IV

प्राकृत काव्य और भारतीय काव्य परम्परा

23. श्रमण परम्परा के संस्कृत एवं प्राकृत महाकाव्य
-प्रेम सुमन जैन 203
24. वज्जालग्न का वैशिष्ट्य
-रमाकान्त शुक्ल 219
25. संस्कृत काव्यशास्त्रों की प्राकृत-गाथाओं का वैशिष्ट्य
-कमलेश कुमार जैन 226
26. गाहासत्तसई की परम्परा
-हरिराम आचार्य 231
27. प्राकृत-अपभ्रंश-साहित्य में वर्णित समुद्रयात्रा तथा वैदेशिक व्यापार
-विद्यावती जैन 238
28. प्राकृत काव्य परम्परा का संस्कृत और पालि के साथ अन्तःसंबंध
-रजनीश शुक्ल 242
29. जैनागमों में काव्य तत्त्व
-हरिशंकर पाण्डेय 255
30. भारतीय काव्यपरंपराओं में अन्तःसंवाद : संस्कृत, पालि और प्राकृत की
लोकजीवन की कविता 266
-राधावल्लभ त्रिपाठी

Section - V

प्राकृत और भारतीय देशज परम्पराएं

31. जैन आचार-पद्धति की सर्वसमावेशिता : प्राकृत साहित्य के सन्दर्भ में
-फूलचन्द जैन 'प्रेमी' 283
32. प्राकृत सूक्ति साहित्य का महत्त्व
-श्रीमती राका जैन 293
33. प्राकृत साहित्य में ज्योतिष का वैशिष्ट्य
-जयकुमार उपाध्ये 303
34. प्राचीन प्राकृत ग्रन्थों में वर्णित श्रावक
-सी. पी. कुसुमा 312
35. प्राकृत-अपभ्रंश काव्य साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
-श्रीमती सरोज जैन 323

36.	तिलोयपण्णात्ति प्राकृत ग्रन्थ का महत्त्व —धर्मेन्द्र जैन	334
37.	आचार्य देवसेन का प्राकृत साहित्य —ज्योतिबाबू जैन	340
38.	प्राकृत साहित्य में व्रत साहित्य —शीतल चंद्र जैन	347
39.	Prakrit Literature in South India —Shubha Chandra	351

Section - VI

प्राकृत का पाण्डुलिपि साहित्य, वैज्ञानिक परम्परा, प्राकृत अनुसन्धान का विकास और सम्पादन कला

40.	प्राकृत-अपभ्रंश की कुछ प्रमुख पाण्डुलिपियाँ —राजाराम जैन	359
41.	आचार्य कुन्दकुन्द के अष्टपाहुडों की चिन्तनपरक अभिव्यक्ति —रमेशचन्द्र जैन	377
42.	जैनदर्शन की प्राकृत पारिभाषिक शब्दावली व अन्य दर्शनों में उसकी संक्रान्ति —कमलेश कुमार जैन	384
43.	प्राकृत कोश साहित्य परम्परा —अनेकान्त कुमार जैन	389
44.	प्राकृत-साहित्य के कतिपय दार्शनिक पारिभाषिक शब्द —वीर सागर जैन	404
45.	दक्षिण भारत के प्राकृत टीकाकार —एन. सुरेश कुमार	407
46.	प्राकृत षट्खंडागम में कर्मसिद्धांत विवेचन —महावीर प. शास्त्री	414

List of Contributors

443